INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (online)
ISSN 2348 - 9359 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMSH.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

संथाल मुण्डा एवं उराँव जनजाति के संस्कृतिक स्वरूप

शोधार्थी रूमा सीट (Ruma Shit)
इतिहास विभाग
सोना देवी विश्वविद्यालय, घाटशिला
शोध निर्देशिका – डॉ० कंचन सिंहा

आदिवासी समाज में भी कई जातियाँ है और अलग–अलग क्षेत्रों में अलग–अलग जनजाति समुदाय निवास करती है। पर इनकी जीवन शैली सभ्यता संस्कृति परंपराओं में समानताएँ पायी जाती है। यह देखा गया है कि संथाल, मुण्डा एवं उराँव जनजाति की पारंपरिक जीवन शैली, रीति रिवाज, भाषा तथा आजीविका के साधन किस प्रकार भिन्न है। उन पर आधुनिकीकरण, शिक्षा और सरकार की विभिन्न योजनाओं से उनके जीवन तथा संस्कृति पर क्या प्रभाव पड़ा है। इन जनजातियों का सांस्कृतिक जीवन मुख्य रूप से उनके दर्शन सोच, अनुष्ठान और प्रथाओं सहित विभिन्न सांस्कृतिक गतिविधियों पर निर्भर करता है। जनजाति संस्कृति भारतीय संस्कृति के बाहक भी है। जनजाति संस्कृति के अंतर्गत लोक संगीत व नृत्य के बड़े ही प्रेमी होते हैं।

बंसी, ढोल, नगाड़े, केन्द्ररा इत्यादि इनके प्रमुख वाद्य यंत्र है। विभिन्न अवसरों पर उत्सवों में लोग संगीत तथा नृत्य में विभोर हो जाते हैं। इनके लोक संगीत कर्णप्रिय तथा लोकगीत जीवन के अनुभवों पर आधारित होता है। ये लोग प्रकृति के उपासक होते है। प्रकृति पूजा में विश्वास रखते है। जनजाति समुदाय प्रकृति के बहुत करीब होते है। वे सभी ऋतुओं को त्योहारों के माध्यम से धूमधाम और भव्यता के साथ मनाते है। संथाल मुण्डा उराँव जनजाति झारखण्ड समेत भारतीय लोक जीवन का एक विशिष्ठ अंग है। ये
हो जनजाति आज आधुनिक समाज में अपनी पारम्परिक सांस्कृतिक एवं जातीय धरोहर की संरक्षण करते हुए आदिवासी जीवन दृष्टि और जीवानुभवों की पीढ़ियों तक पहुँचा रहे है।

संथाल जनजाति – संथाल जनजाति झारखण्ड राज्य की एक प्रमुख जनजाति है। जो मुख्य रूप से संथाल परगना प्रमंडल एवं पश्चमी एवं पूर्वी सिंहभूम, हजारीबाग, धनबाद तथा गिरीडीह जिलों में निवास करती है। संथाल जनजाति झारखण्ड की आबादी में सबसे बड़ी जनजाति है। झारखण्ड में संथाल जनजाति की अपनी एक अलग सांस्कृतिक की पहचान है। जिसमें लोक चित्र, कला भित्तिचित्र, भारत की ऐतिहासिक कला है। यह कला केवल पेशे के लिए नहीं बल्कि कला आनंद लेने और उत्सव मनाने के लिए भी है। संथाल लोग पहले प्राकृतिक रंगों का इस्तेमाल करते थे जो पत्तियों और फूलों से तैयार किए जाते है। जो सहसा लोगों की ध्यान अपनी ओर खींचती है।

संथाल जनजाति की सांस्कृतिक और धार्मिक विश्वास प्रकृति पूजा और आत्माओं की उपासना पर आधारित है। पारंपरिक रूप से यह समुदाय सरना धर्म का पालन करता है। जिसमें बोंगा की आराधना की जाती है। जल जंगल जमीन से गहरा संबंध होने के कारण इनके अनुष्ठान और त्योहार भी प्रकृति केंद्रित होते है। इनके सोहराय और बाहा परब जैसे उत्सव कृषि और बनस्पतियों से जुड़े है। यह जनजाति में मरणोपरांत शव संस्कार अस्थि प्रवाह तथा श्राद्ध की रस्में पूरी की जाती है । शव संस्कार प्रायः शव को जलाकर या दफना कर करने की प्रथा है।

संथाल जनजाति की धार्मिक और सांस्कृतिक प्रथाएँः–

प्रकृति पूजा – ये प्रकृति के उपासक होते है। जिसमें सिंग बोंगा (सूर्य देवता) उनके सर्वोच्च देवता है। और मरांग बुरू, जाहेर एरा (पवित्र वन देवी) उनके प्रमुख ग्राम देवता है। उनके पूजा स्थल जाहेर स्थान (पवित्र उपवन) और सरना (पवित्र वृक्ष) होते है। अपने पूर्वज देवताओं हापरान्को बोंगा और घर के देवताओं (आवे बोंगा) की भी पूजा करते थे।

विवाह (वापला)– इस समाज में कई प्रकार के विवाह प्रचलित है।

किरिंग बापला – सबसे सामान्य जिसमें दुल्हा–दुल्हन के परिवार को वधु मुल्य (कन्या मूल्य) देता है। वधु सेवा जिसमें दूल्हा–दुल्हन के परिवार के लिए काम करता है।

विधवा विवाह – पुनर्विवाह (सांगा) आदि भी स्वीकार्य है। संथाल जनजाति में विधवा विवाह प्रचलित है। और समाजिक रूप से मान्य है।

त्योहार और संगीत नृत्य

त्योहार – बहा (फूलों का त्योहार), सोहराई (फसल कटाई) और करम उनके प्रमुख त्योहार है। जिसमें नृत्य गीत होते हैं।

संगीत और नृत्य – इनके संगीत में ढोल, वांसुरी (तिरियो) और सारंगी होते है। महिलाएँ पंक्तिवद्ध होकर नाचती है। और पुरूष वाद्य यंत्र बजाते है।

संथालों की संस्कृति उनकी दैनिक गतिविधियों उनके दर्शन और प्रकृति के साथ उनके गहरे जुड़ाव को दर्शाती है। जो उनकी परंपराओं और रिवाजों में गहराई को प्रदर्शित करता है। हुआ है।

मुण्डा जनजाति:–

मुण्डा जनजाति को संस्कृति प्रकृति प्रेम, सरलता और कलात्मकता से भरपूर है। जिसमें सरहुल, करम, माघे जैसे त्योहार, पहान (पुजारी) द्वारा अनुष्ठान और अखरा (नृत्य स्थल) पर सामुहिक नृत्य गान प्रमुख है। उनकी सामाजिक व्यवस्था में पहाड़ा (ग्राम पंचायत) ससन्दीरी (पूर्वज स्मारक पत्थर) और होरादिरी (वंश वृक्ष पत्थर) महत्वपूर्ण है। जो उनकी परम्पराओं, पूर्वजो और प्रकृति से गहरे जुड़ाव को दर्शाते है।

झारखण्ड के खूँटी जिला मुख्य रूप से मुण्डा बहुल क्षेत्र है। यहाँ के प्रमुख निवासी मुण्डा जनजाति है। जिन्हे शिक्षा प्रणाली से लंबे समय तक बाहर रखा गया, इसलिए उनमें साक्षरता की दर निम्न है। मुण्डा जनजाति की उत्पत्ति इनका आगमन के संबंध में मतभेद है।

मुण्डा जनजाति एक अंतर्विवाही है। ऑस्ट्रो एशियाटिक भाषा परिवार की मुंडारी इनकी भाषा है। ये लोग पितृसत्तात्मक, "गिटियारा" नामक छात्रावास प्रणाली इनके बीच पायी जाती है। कई देवताओं में विश्वास करते हैं। उनके सर्वोच्च देवता सिंगबोंगा कहा जाता है। इसके बाद महत्वपूर्ण रूप से गाँव की देवता हसू बोंगा काओ देसुली, जाहर गाँव बुरी, चंडी बोंगा आदि सरना गाँव के पूजारी पाहन पैतृक आत्माओं ओराबोंगा की पूजा करते है। बोंगा को हर सामाजिक और धार्मिक समारोह पर उनसे आशिर्वाद के लिए बुलाये जाते है।

मुण्डा जनजाति मागे, फागू करम सरहुल और सोहराई इत्यादि जैसे कई त्यौहार मनाती है। सरहुल मुंडा का महत्वपूर्ण त्यौहार है। जिसे मार्च, अप्रैल महीने मे मनाया जाता है। यह फूलो का त्यौहार है। इस अवसर पर फूलो को सरना और पाहन लाते है। मागे को पुस महीने के पूर्ण चंद्रमा दिवस में मनाया जाता जो मृत पूर्वजो की आत्मा पूजा की जाती है। गाँव की समृद्धि के लिए अगस्त, सितंबर के महीने में करमा उत्सव मनाया जाता है।

विवाह – मुण्डा जनजाति मे विवाह एक महत्वपूर्ण और सप्ताह भर चलने वाला उत्सव है। उनमे सगोत्रीय विवाह वर्जित है। और कन्या मूल्य की प्रथा प्रचलित है। विवाह में सगाई और

मरंग पारा जैसी रस्मे होती है। और तलाक की भी अनुमति है। जिसमे अनोखी रस्में जैसे मड़वा (विवाह मंडप) के चारो ओर दीया घड़ा फेंकना शामिल है। जो गृहस्थ जीवन का प्रतीक है।

मुंडा जनजाति मे मृत्यु संस्कार आत्मा के शांतिपूर्ण संक्रमण पर केंद्रित होते है। जिसमे उम्बुल आदेर जैसी रस्में होती है। जहाँ मृतक के लिए घर केन्दु की डाली और पुआल से बनाया जाता है। और आत्मा को पितृलोक में बुलाया जाता है। साथ ही "जांग तोपा" नामक अंतिम संस्कार भी होता है। जिसमे हड्डियाँ संभालकर ससन्दीरी (दफन पत्थर) के नीचे रखा जाता है और बाद मे मेमोरियल पत्थर (भोः दीरी) स्थापित किए जाते है। जो पूर्वजों और वंश का प्रतीक है।

मुण्डा जनजाति उनकी प्रकृति से गहरी जुड़ाव सरल जीवन शैली, मजबूत सामुदायिक भावना इनकी प्रमुख विशेषता है।

उराँव जनजाति– उरॉव जनजाति (कुरूख) झारखण्ड की दूसरी सबसे बड़ी जनजाति है। जो अपनी द्रविड़ भाषा (कुरूख) और धूमकुड़िया (युवागृह) जैसे अनूठी सामाजिक, सांस्कृतिक व्यवस्था के लिए जानी जाती है। इनके समाज में पड़हा पंचायती व्यवस्था सरना धर्म (धर्मेश की पूजा) गोत्र व्यवस्था और विवाहों व त्योहारो (जैसे सरहुल) में लोकनृत्य व संगीत का खास महत्व है। हलाँकि आधुनिकीकरण व ईसाईकरण के कारण इनमें बदलाव आ रहे है।

प्रोटो– आस्ट्रोलॉयड समूह से संबंधित कद छोटा सिर लंबा, नाक चौड़ी, रंग गहरा सांवला या काला, बाल काले और खुरदुरे स्वंय को "कुरुख" कहते है। जो संस्कृत के कर्ष हल चलाना से जुड़ा है। द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा बोलते है। इनका धर्म प्रकृति पर आधारित है। वे जंगल चट्टानें और सूर्य सबको जीवित आत्मा मानते है। इनके सर्वोच्च देवता धर्मेश है। जिन्हे वे सूर्य के समान शक्तिशाली और दयालु मानते है। इसके साथ ही वे गाँव देवी चाली पाचु (परिवार की देवी) और कई वन देवताओं की भी पूजा करते है। उनके प्रत्येक त्यौहार में प्रकृति का स्पर्श और सामूहिकता की भावना झलकती है। जब कोई नया घर बनता है तो पहले हंडकट्टा नामक शुद्धिकरण अनुष्ठान किया जाता है। जब कोई व्यक्ति गुजर जाता है तो उसकी आत्मा की शांति के लिए हरबोरा संस्कार किया जाता है। उनके जीवन का हर मोड़ धर्म और परंपरा से जुड़ा है मानो देवता उनके साथ हर पल चलते हैं।

कला संगीत और नृत्य

उरॉव लोगों के जीवन में संगीत और नृत्य सिर्फ मनोरंजन नहीं बल्कि एक अध्यात्मिक अनुभव है। उनकी ढोलकी, मांदर और बांसुरी की धुनें जब रात की शांति में गूँजती है। तो ऐसा लगता है। मानो जंगल की आत्माएँ स्वयं नाच रही हो।

धुम्कुरियाः युवाओं की शिक्षा संस्था–

धुम्कुरिया उरॉव समाज की सबसे अनोखा परंपरा है। यह एक प्रकार का युवाश्रम है जहाँ लड़के और लड़कियों सामाजिक जीवन कला संगीत और सामुदायिक मूल्य सीखते है।
मृतक संस्कार में मृत्यु के बाद परिवार के लोग विशेष प्रार्थनाएँ करते है। और जल मे अस्थियाँ प्रवाहित करते है। उनका विश्वास है। आत्मा अमर है। और प्रकृति में विलीन होकर पुनः जन्म लेती है।

उराँव जनजाति झारखण्ड की सांस्कृतिक विरासत का हिस्सा है जो आधुनिकता की दौड़ में भी अपनी जड़ो को थामे हुए है। उनका हर त्यौहार, हर गीत हर प्रार्थना प्रकृति के साथ उनका गहरा रिश्ता दर्शाती है। यह समुदाय हमें सिखाता है कि सच्ची समृद्धि मशीनो से नहीं बल्कि मिट्टी संगीत और साझा प्रेमी से आती है। उरॉव की सांस्कृतिक विरासत एक जनजाति की विरासत नहीं बल्कि मानवता की उस यात्रा की कहानी हैः–

जहाँ मनुष्य और प्रकृति साथ–
साथ चलते है। एक ही लय में।
निष्कर्षः–
संथाल, मुंडा और उराँव जनजाति विशेष रूप से झारखण्ड की प्रमुख जनजाति है। एवं सबसे बड़ी जनजाति में से है। जिनकी अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और धार्मिक पहचान है। इनका पारंपरिक नेतृत्व घनिष्ठ सामुदायिक संबंध प्रकृति का उपासक एक समृद्ध लोक जीवन जिसमें गीत और नृत्य महत्वपूर्ण है।

संदर्भ ग्रंथ

(1) के० एस० सिंह – इनसाइक्लोपीडिया मुंडारिका
(2) राम दयाल मुण्डा – आदि धरम
(3) दिवाकर मिंज – द रिलिजियस हिस्ट्री ऑफ मुण्डा एण्ड उरॉव ट्राइब्स
(4) शरत चन्द्र राय – द उरॉव ऑफ छोटानागपुर
(5) शरत चन्द्र राय – उरॉव रिलिजन एण्ड कस्टमस
(6) शरत चन्द्र राय – द मुण्डा एण्ड देयर कंट्री
(7) ए० पी० विद्यार्थी – संथाल समाज और संस्कृति पृष्ठ संख्या, 24,61,78
(8) अग्रवाल रामदास – 'संथाली समाज' पृष्ठ संख्या, 11, 53

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA

Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM